

ज़िल-हिज्जा की प्रथम दहाई की महत्ता एवं इन दिनों में किए जाने वाले सद्कर्म

साबिर हुसैन मुहम्मद मुजीबुर रहमान

निःसंदेह, अभी जिन दिनों से हम गुजर रहे हैं, वे सम्पूर्ण वर्ष के सर्वश्रेष्ठ एवं परम महत्वपूर्ण दिवस हैं। इन दिनों को वह गौरव एवं उत्कृष्टता प्राप्त है, जो किसी अन्य कालखंड को प्राप्त नहीं। सृष्टिकर्ता, अल्लाह तआला ने इन दिनों की क्रसम खा कर इनकी महत्ता को उजागर किया है। चूँकि अल्लाह तआला केवल विशिष्ट एवं महानतम वस्तु की ही शपथ लेता है, अतः इन दिनों की शपथ लेना इस तथ्य का प्रमाण है कि ये दिवस अल्लाह के निकट अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

अल्लाह ने सूरह फज्र के आरंभ में कहा है:

﴿وَالْفَجْرِ ۝۱ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝۲﴾

"शपथ है प्रभातकाल की, तथा शपथ है दस रात्रियों की।" (सूरह अल-फ़ज्र: 1-2)।

यहाँ "दस रात्रियों" से तात्पर्य ज़िल-हिज्जा के प्रथम दस दिवसों से है, जैसा कि विख्यात धर्मग्रंथ भाष्यकार अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन जुबैर, एवं प्रसिद्ध व्याख्याता मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह का मत है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलैह ने विविध विचारों को प्रस्तुत करने के पश्चात इसी मत को सर्वाधिक प्रमाणित एवं यथोचित ठहराया है।⁽¹⁾

क्या ये दिवस रमज़ान के अंतिम दस दिवसों से भी अधिक श्रेष्ठ हैं?

निःसंदेह! ज़िल-हिज्जा के प्रथम दस दिवस रमज़ान के अंतिम दस दिवसों से अधिक श्रेष्ठ हैं, यद्यपि रमज़ान की अंतिम दस रात्रियाँ ज़िल-हिज्जा की आरंभिक दस रात्रियों से अधिक उत्कृष्ट हैं। प्रकांड विद्वान इब्ने तैमिया रहमतुल्लाह अलैह से प्रश्न किया गया कि ज़िल-हिज्जा के प्रथम दस दिवस एवं रमज़ान के अंतिम दस दिवसों में कौन श्रेष्ठ हैं? तो उन्होंने उत्तर दिया:

أَيَّامُ عَشْرِ ذِي الْحِجَّةِ أَفْضَلُ مِنْ أَيَّامِ الْعَشْرِ مِنْ رَمَضَانَ، وَاللَّيَالِي الْعَشْرُ الْأَوَاخِرُ مِنْ
رَمَضَانَ أَفْضَلُ مِنْ لَيَالِي عَشْرِ ذِي الْحِجَّةِ،

(1) देखें तफ़सीर इब्ने -ए- कसीर (8/ 390-391)।

"ज़िल-हिज्जा की प्रथम दहाई के दिन, रमज़ान की अंतिम दहाई के दिनों से अधिक श्रेष्ठ हैं, किन्तु रमज़ान की अंतिम दस रात्रियाँ ज़िल-हिज्जा की आरंभिक दस रात्रियों से अधिक उत्कृष्ट हैं"।

इस पर टिप्पणी करते हुए अल्लामा इब्नुल क्रय्यिम रहिमहुल्लाह कहते हैं कि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति जब इस उत्तर पर विचार करेगा तो उसे यह पूर्ण, व्यापक और संतोषजनक लगेगा। ज़िलहिज्जा के पहले दस दिनों में ऐसा कोई दिन नहीं है, जिसमें किया गया कार्य अल्लाह तआला को अत्यधिक प्रिय न हो। इनमें यौम-ए-अरफा (9 ज़िलहिज्जा), यौम-ए-नह्र (कुर्बानी का दिन, 10 ज़िलहिज्जा) और यौम-ए-तरविया (8 ज़िलहिज्जा) शामिल हैं, जो इबादत और फज़ीलत के दृष्टिकोण से बेजोड़ हैं। वहीं, रमज़ान की अंतिम दहाई की रातों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरी तरह इबादत और बंदगी में गुज़ारते थे, और इनमें लैलतुल कद्र जैसी रात शामिल है, जो एक हज़ार महीनों से बेहतर है।⁽²⁾

इन पावन दिवसों में संपन्न किए जाने योग्य सद्कर्म:

इन दिवसों में प्रत्येक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को अधिकाधिक पुण्य कर्मों में संलग्न रहना चाहिए, जैसे:

- पवित्र कुरआन का पाठ
- आरंभिक नौ दिवसों (विशेषतः अरफा के दिवस) का उपवास रखना
- दान-दक्षिणा (सदक्रा) देना
- तौबा एवं अल्लाह से क्षमायाचना करना
- तस्बीह (सुब्हान् अल्लाह), तहमीद (अल्हम्दु लिल्लाह), एवं तकबीर (अल्लाहु अकबर) का बारंबार उच्चारण करना
- सदाचार का प्रचार एवं दुराचार का निषेध करना
- नियमानुसार नमाज़ अदा करना
- माता-पिता के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार करना एवं पारिवारिक संबंधों को सुदृढ़ करना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है:

⁽²⁾ देखें: मज्मूअ अल-फ़तावा (25/ 287)।

مَا الْعَمَلُ فِي أَيَّامٍ أَفْضَلَ مِنْهَا فِي هَذِهِ؟» قَالُوا: وَلَا الْجِهَادُ؟ قَالَ: «وَلَا الْجِهَادُ، إِلَّا رَجُلٌ خَرَجَ يُخَاطِرُ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ، فَلَمْ يَرْجِعْ بِشَيْءٍ»

"इन (दस) दिनों में किया गया कोई भी कार्य अन्य दिनों के कार्यों की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट नहीं है।" सहाबा ने पूछा: "क्या जिहाद भी इसके समतुल्य नहीं?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया: "जिहाद भी इसके समतुल्य नहीं, केवल उस व्यक्ति को छोड़कर जिसने अपने प्राण और संपत्ति को संकट में डालकर प्रस्थान किया और वह कुछ भी वापस लेकर न लौटा।"⁽³⁾

सुनन अबू दावूद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ बीवियों से वर्णित है कि:

كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ تِسْعَ ذِي الْحِجَّةِ، وَيَوْمَ عَاشُورَاءَ، وَثَلَاثَةَ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، أَوَّلَ اثْنَيْنِ مِنَ الشَّهْرِ وَالْخَمِيسَ

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िलहिज्जा के प्रथम नौ दिवस, यौम-ए-आशूरा (10 मुहर्रम) तथा प्रत्येक मास के तीन दिवस, अर्थात् मास के प्रथम सोमवार एवं गुरुवार का उपवास रखा करते थे।"

यद्यपि कुछ विद्वानों, जैसे अल्लामा ज़ैलई एवं मुसनद अहमद के अन्वेषकों ने इस हदीस को ज़ईफ़ (दुर्बल) ठहराया है, तथापि अल्लामा स्यूती, अल्लामा अल्बानी एवं ज़ुबैर अली ज़ई ने इसे सहीह (सत्यापित) कहा है।

सहीह मुस्लिम में उल्लेखित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

صِيَامُ يَوْمِ عَرَفَةَ، أَحْتَسِبُ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ، وَالسَّنَةَ الَّتِي بَعْدَهُ

"यौम-ए-अरफा का रोज़ा रखने के संबंध में मैं अल्लाह से आशा करता हूँ कि यह विगत एवं आगत दो वर्षों के (लघु) पापों को समाप्त कर देता है।"

अल्लामा इब्न -ए- उसैमीन रहिमहुल्लाह कहते हैं:

"ज़िलहिज्जा के प्रथम दस दिनों में दिया गया दान, रमज़ान के अंतिम दस दिनों में किए गए दान की अपेक्षा अल्लाह को अधिक प्रिय है।"

⁽³⁾ देखें: मज्मूअ अल-फ़तावा (25/ 287)।

इन दिनों में तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह), तहमीद (अल्हम्दु लिल्लाह) एवं तकबीर (अल्लाहु अकबर) का बारंबार उच्चारण करना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है:

مَا مِنْ أَيَّامٍ أَعْظَمَ عِنْدَ اللَّهِ وَلَا أَحَبُّ إِلَيْهِ الْعَمَلُ فِيهِنَّ مِنْ هَذِهِ الْأَيَّامِ الْعَشْرِ، فَأَكْثَرُوا فِيهِنَّ
مِنَ التَّهْلِيلِ وَالتَّكْبِيرِ وَالتَّحْمِيدِ،

"ज़िलहिज्जा के इन दस दिनों से अधिक सम्मानित कोई अन्य दिन अल्लाह की दृष्टि में नहीं, और न ही इन दिनों के कार्यों से अधिक प्रिय कोई अन्य कार्य। अतः इन दिनों में तहलील, तकबीर एवं तहमीद का अधिकाधिक उच्चारण करो।"⁽⁴⁾

इन दिनों में तकबीर के प्रकार एवं उसके पालन का उचित विधि-विधान:

तकबीर दो प्रकार की होती हैं: तकबीर -ए- मुतलक एवं तकबीर -ए- मुक़य्यद।

1. तकबीर -ए- मुतलक – यह ज़िल-क्रादा के अंतिम दिवस को ज़िल-हिज्जा का चाँद निकलने से आरंभ होकर ज़िल-हिज्जा की 13वीं तारीख के सूर्यास्त तक पढ़ी जाती है, किसी भी समय, चाहे नमाज़ से पूर्व हो अथवा बाद में, भोर में हो अथवा सांझ में। सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ﴾

"...और वे निर्धारित दिनों में अल्लाह का स्मरण करें..."। (सूरह अल-हज्ज: 28)
"अय्याम-ए-मालूमात" से अभिप्राय ज़िल-हिज्जा के प्रथम दस दिन हैं, जैसा कि अब्दुल्लाह इब्न -ए- अब्बास, अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा, मुजाहिद, अता, सईद बिन जुबैर, हसन, क़तादा, ज़ह्हाक, अता ख़ुरासानी और इब्राहीम नखई रहिमहुमुल्लाह आदि विद्वानों से वर्णित है।⁽⁵⁾

2. तकबीर -ए- मुक़य्यद – इस का समय ग़ैर-हाजियों के लिए यौम-ए-अरफ़ा (9 ज़िल-हिज्जा) की फ़ज़्र की नमाज़ के बाद से लेकर अय्याम-ए-तशरीक की अस्त्र की नमाज़ के बाद तक निर्धारित है। यह प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ी जाएगी, इस प्रकार ये तकबीर पांच दिनों में कुल तेईस (23) बार पढ़ी जाएगी।

⁽⁴⁾ मुसनद अहमद, रिसाला संस्करण (10/ 296) हदीस संख्या (6154)।

⁽⁵⁾ देखें: तफ़सीर इब्न -ए- कसीर (5/ 415)।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ﴾

"...और गिनती के कुछ दिनों में अल्लाह को याद करो..."। (सूरह अल-बक्रा: 203)

"अय्याम-ए-मादूदात" से अभिप्राय अय्याम-ए-तशरीक (11, 12 एवं 13 ज़िल-हिज्जा) हैं, जैसा कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का कथन है, तथा इक्रिमा रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि इस आयत में अय्याम-ए-तशरीक में फ़र्ज नमाज़ों के बाद तकबीर कहने का आदेश है।⁽⁶⁾

हाजियों के लिए तकबीर-ए-मुक़य्यद कहने का समय यौम-ए-नहर (10 ज़िल-हिज्जा) को जमरा-ए-अक़बा पर कंकरियाँ मारने के बाद प्रारंभ होता है, जैसा कि शैख़ इब्न -ए- बाज़ और शैख़ इब्न -ए- उसैमीन रहिमहुमल्लाह का मत है। क्योंकि इससे पहले के दिनों में हाजी तलबिया पढ़ने में व्यस्त होता है।

किंतु यदि कोई हाजी तलबिया के साथ तकबीर भी पढ़े तो इसमें कोई समस्या नहीं है, जैसा कि सहीह बुखारी में अनस बिन मलिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है:

«كَانَ يُلَبِّي الْمَلَبِّي، لَا يُنْكَرُ عَلَيْهِ، وَيُكَبِّرُ الْمُكَبِّرُ، فَلَا يُنْكَرُ عَلَيْهِ»

"तलबिया पढ़ने वाला तलबिया पढ़ता और तकबीर कहने वाला तकबीर कहता, तथा दोनों पर कोई आपत्ति नहीं की जाती थी।" परंतु मुहरिम (जो हज्ज के लिए एहराम में हो) के लिए तलबिया कहना उत्तम है, जबकि ग़ैर- मुहरिम (जो एहराम में नहीं है) के लिए इन विशेष दिनों में तकबीर कहना अधिक श्रेष्ठ है।⁽⁷⁾

इमाम बुखारी ने अपनी सहीह में वर्णन किया है कि अबू हुरैरा एवं अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा इन दिनों में बाज़ार की ओर प्रस्थान करते और उच्च ध्वनि से तकबीर उच्चारित करते, जिससे अन्य लोग भी तकबीर कहना आरंभ कर देते थे।⁽⁸⁾

तकबीर के शब्द:

⁽⁶⁾ देखें: सहीह बुखारी (2/ 20) एवं तफ़सीर इब्न -ए- कसीर (1/ 560)।

⁽⁷⁾ यही शैख़ इब्न -ए- बाज़ रहिमहुल्लाह का मत है।

⁽⁸⁾ सहीह बुखारी (2/ 20)।

इस संबंध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई निश्चित तकबीर प्रमाणित नहीं है, किंतु कुछ सहाबा से विभिन्न तकबीर सहीह सनद से प्रमाणित हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं:

- अली बिन अबू तालिब एवं अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा द्वारा पढ़ी जाने वाली तकबीर:

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، وَلِلَّهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व-लिल्लाहिल हम्द।

इसे इब्न -ए- अबी शैबा ने "अल-मुसन्नफ़"⁽⁹⁾ में वर्णित किया है, और इब्न अल-हुमाम⁽¹⁰⁾ ने कहा है कि इसकी सनद (शृंखला) जय्यद (उत्तम) है

- सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु द्वारा पढ़ी जाने वाली तकबीर:

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कबीरा।

हाफ़िज़ इब्न -ए- हजर ने "फ़तह अल-बारी"⁽¹¹⁾ में उल्लेख किया है कि इसे अब्दुर्रज़ाक़ ने सहीह सनद (प्रामाणिक शृंखला) के साथ वर्णित किया है

- अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा द्वारा पढ़ी जाने वाली तकबीर:

اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللَّهُ أَكْبَرُ وَأَجَلُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، وَلِلَّهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अकबर कबीरा, अल्लाहु अकबर कबीरा, अल्लाहु अकबर व अजल्ल, अल्लाहु अकबर, व-लिल्लाहिल हम्द।

⁽⁹⁾ अल-मुसन्नफ़ (1/ 489) हदीस संख्या (5646)।

⁽¹⁰⁾ फ़तह अल-कदीर (2/ 82)।

⁽¹¹⁾ देखें: फ़तह अल-बारी (2/ 462)।

इसे इब्न -ए- अबी शैबा ने "अल-मुसन्नफ़"⁽¹²⁾ में वर्णन किया है, और अल्लामा अल्बानी⁽¹³⁾ ने इसकी सनद (श्रृंखला) को सहीह (प्रामाणिक) ठहराया है।

यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि ज़िल-हिज्जा के प्रथम दस दिनों में अधिक से अधिक नेक कार्य करना चाहिए, इसी प्रकार विशेष रूप से इन दिनों में स्वयं को बुराइयों और पापों से बचाए रखना आवश्यक है, क्योंकि ह़राम (प्रतिष्ठित) महीनों, दिनों और स्थानों में पापों की गंभीरता बढ़ जाती है।

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है:

﴿فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ﴾

"...तो इन महीनों में अपनी आत्मा पर अत्याचार मत करो..."। (सूरह अत-तौबा: 36)

हाफ़िज़ इब्न -ए- कसीर रहिमहुल्लाह इस आयत की तफ़सीर (व्याख्या) में लिखते हैं कि: इन हुरमत वाले (पवित्र) महीनों में पाप करना अन्य समयों की तुलना में अधिक गंभीर और कठोर होता है।

जिस प्रकार मक्का मुकर्रमा में किए गए पापों की गंभीरता अधिक हो जाती है, जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ﴾

"...और जो इसमें अन्यायपूर्वक पाप करने का इरादा करेगा, उसे हम कड़ी यातना का स्वाद चखाएंगे..."। (सूरह अल-हज़्ज: 25)। उसी प्रकार, ह़राम (पवित्र) महीनों में किया गया पाप भी अधिक गंभीर माना जाता है।⁽¹⁴⁾

जिस प्रकार सर्वश्रेष्ठ एवं पवित्र स्थानों तथा समयों में किए गए अच्छे कार्यों का प्रतिफल बढ़ जाता है, उसी प्रकार उन स्थानों और समयों में किए गए बुरे कर्मों का दुष्प्रभाव भी अधिक होता है। हालांकि, नेक कार्यों का प्रतिफल मात्रा (संख्यात्मक) और गुणवत्ता (गुणात्मक) दोनों दृष्टियों से बढ़ाया जाता है, जबकि बुरे कर्मों का दंड केवल गुणवत्ता की दृष्टि से अधिक होता है, मात्रा की दृष्टि से नहीं।

⁽¹²⁾ अल-मुसन्नफ़ (1/ 489) हदीस संख्या (5646)।

⁽¹³⁾ इर्वाउल ग़लील (3/ 126)।

⁽¹⁴⁾ देखें: तफ़सीर इब्न -ए- कसीर (4/ 148) इसी प्रकार की बातें अल्लामा कुर्तुबी रहिमहुल्लाह ने भी कही हैं, देखें: तफ़सीर अल-कुर्तुबी (8/ 134)।

इस संदर्भ में, अल्लाह तआला ने सूरह अनआम में फरमाया है:

﴿مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ﴾

"जो व्यक्ति कोई भलाई करेगा, उसे उसके दस गुना मिलेगा, और जो व्यक्ति कोई बुराई करेगा, उसे सिर्फ उतना ही दंड मिलेगा जितनी उसकी बुराई थी, और उन पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा।" (सूरह अनआम: 160)।

तथा सूरह हज्ज में अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ﴾

"जो भी वहां अन्यायपूर्वक धर्मविरोधी कृत्य का इरादा करेगा, हम उसे पीड़ादायक यातना का स्वाद चखाएंगे।" (सूरह हज्ज: 25)।

यहां अल्लाह ने यह नहीं कहा कि बुराई को दुगना कर दिया जाएगा, बल्कि यह बताया कि ऐसे व्यक्ति को दर्दनाक यातना का सामना करना पड़ेगा। इससे स्पष्ट होता है कि मक्का और मदीना (या अन्य पवित्र स्थानों एवं समयों) में किए गए पापों की गंभीरता मात्रा में नहीं बल्कि गुणात्मक रूप से बढ़ती है।

अल्लाह तआला हम सभी को इस पवित्र अवधि में अधिक से अधिक सद्कर्म करने और बुराइयों से बचने की तौफ़ीक व अनुग्रह प्रदान करे।